INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान डीप्टी जेलर

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 2

राजस्थान का इतिहास व कला संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान डिप्टी जेलर**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान डिप्टी जेलर" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/cevyjl

Online Oder करें - https://shorturl.at/PvNxS

मूल्य :	संस्करण : नवीनतम

क्र.सं.	अध्याय	पेज
	<u>राजस्थान का इतिहास</u>	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	17
3.	ऐतिहासिक (केंद्र)	25
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	30
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली	84
6.	स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)	99
7.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	106
8.	राजस्थान का एकीकरण	110
9.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	115
10.	प्रजामण्डल आंदोलन	124
	<u>कला एवं संस्कृति</u>	
1.	वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ – • किले और स्मारक (छतरियाँ) • राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ • प्रमुख महल	135
2.	चित्रकला	155
3.	हस्त कला / हस्तशिल्प	165
4.	राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ	173
5.	राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	181
6.	वेशभूषा एवं आभूषण	185
7.	मेले एवं त्यौहार	188

8.	राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत)	199
9.	राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	206
10.	राजस्थानी संस्कृति परम्पराएं और विरासत प्रथाएं	220
11.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय	225
12.	राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	234
13.	महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल	244
14.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	246

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

राजस्थान इतिहास के स्रोत

- ***राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-***
  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।
  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं।
  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिंता" था।
- *राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1821 के मध्य* ***मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल*** *एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को "****घोड़े वाले बाबा****" कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।*
- *गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।*
- *कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।*
- *अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।*
- *अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।*
- *तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।*
- *प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।*
- *अभिलेखों के अध्ययन को* ***एपिग्राफी*** *कहा जाता है।*
- *भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी* ***भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।***
- *शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।*
- *राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।*
- *फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।*
- ***अशोक के अभिलेख :-*** *मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले हैं।*
- *भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।*
- *अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में* ***कलकत्ता संग्रहालय*** *में सुरक्षित है।*

बड़ली का अभिलेख :- *यह राजस्थान का सबसे* ***प्राचीनतम अभिलेख*** *है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख* ***केकड़ी जिले*** *की भिनाय तहसील के* ***बड़ली गाँव*** *के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।*
वर्तमान में यह ***अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।***

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- *राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।*
- *इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।*
- *इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।*
- *दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।*
- *इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।*
- *शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है ।*

मानमोरी का अभिलेख :- *713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।*

- *इस अभिलेख में इसके* ***रचयिता पुष्य*** *तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।*
- *इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।*
- *राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।*
- *यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।*
- *इस अभिलेख में '****अमृत मंथन****' का उल्लेख मिलता है।*
- *इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों (****महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)*** *के बारे में जानकारी मिलती है।*

मण्डौर अभिलेख :- *जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।*

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- *प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।*

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है ।

कणसवा का अभिलेख :- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चोचिंगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में **'बापा'** से **'महाराणा समरसिंह'** तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।

- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।

- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

श्रृंगी ऋषि का लेख :- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार **'कविराज वाणीविलास योगेश्वर'** थे एवं उत्कीर्णकर्ता हद्दा के पुत्र पन्ना थे।

- यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में पराजित करने का उल्लेख है।
- इस लेख में राणा लाखा द्वारा काशी, प्रयाग व गया (त्रिस्थली) की यात्रा करने का उल्लेख भी मिलता है।

आमेर का लेख :- 1612 ई. में संस्कृत तथा नागरी भाषाओं में उत्कीर्ण इस लेख से कच्छवाहा शासकों के बारे में जानकारी मिलती है। इस लेख में कच्छवाहा वंश को **'रघुवंश तिलक'** कहा गया है।

- इस लेख में निजाम शब्द को प्रांतीय विभाग के रूप में उल्लेखित किया गया है। **इसमें मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।**

बरबथ का लेख :-

- 1613-14 ई. के इस लेख में मुग़ल शासक अकबर की पत्नी मरियम-उज-ज़मानी द्वारा निर्मित बरबथ बाग एवं बयाना बावड़ी का उल्लेख मिलता है। **यह मुग़ल राजपूत वैवाहिक संबंध का बोध कराता है।**

सांभर का लेख (1634 ई.):- यह लेख एक सराय के दरवाजे पर हिन्दी भाषा में उत्कीर्ण है।

- इसमें अकबर द्वारा इस सराय के निर्माण करने तथा शाहजहाँ द्वारा 1634 ई. में इसका जीर्णोद्वार करने का उल्लेख है। इसकी भाषा हिन्दी है ।

किणसरिया लेख (999 ई.):- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह लेख **डीडवाना-कुचामन** के किणसरिया गाँव में अंकित है।

- इस लेख में चौहान वंश के शासक वाक् पतिराज, सिंहराज तथा दुर्लभराज की विजयों व उपलब्धियों का वर्णन है।
- दूसरे भाग में दधीचि वंश के चच्य द्वारा मंदिर बनाने का उल्लेख है ।

भ्रमरमाता का लेख :-

- प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी के भ्रमर माता मंदिर से प्राप्त 490 ई. का शिलालेख 5वीं सदी की राजनीतिक स्थिति एवं प्रारंभिक कालीन सामन्त प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।
- इस शिलालेख में गौर वंश एवं औलिकार वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख का उत्कीर्णक ब्रह्मसोम था।

पाणाहेड़ा का लेख (1059 ई.) :-

- बाँसवाड़ा के पाणाहेड़ा गाँव से प्राप्त लेख।
- इस लेख में वागड़ एवं मालवा के परमार वंश के राजाओं (मुंज, सिंधुराज एवं भोज) की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

नांदसा यूप स्तम्भ लेख (225 ई.):-

- भीलवाड़ा जिले के नांदसा गाँव से प्राप्त स्तम्भ लेख।

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषणः बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)

- ***मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण*** *में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।*
- *बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।*

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. *कालीबंगा की सभ्यता -*

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - ***सरस्वती नदी*** *। इसे* ***द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी*** *के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे* ***पीलीबंगा*** *की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।*

इस सभ्यता की खोज -

- *इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।*
- *इस सभ्यता के खोजकर्ता* ***अमलानंद घोष*** *हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।*
- *इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।*

1. ***बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)***
2. ***बीके (बालकृष्ण) थापर***

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरीके बारे में -

- *ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।*
- *उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।*
- *बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।*

1. *पूर्वी राजस्थानी*
2. *पश्चिमी राजस्थानी*

- *इस सभ्यता का कालक्रम* ***कार्बन डेटिंग पद्धति*** *के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।*
- *कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है -* ***"काले रंग की चूड़िया"****। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।*
- *कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो* ***स्वतंत्रता के बाद खोजी*** *गई थी। यह एक* ***कांस्य युगीन सभ्यता*** *है।*
- *हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा* ***1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय*** *की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय* ***हनुमानगढ़*** *जिले में स्थित है।*

इस सभ्यता की विशेषताएँ -

- *इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को* ***समकोण*** *पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को* ***"ऑक्सफोर्ड पद्धति"*** *कहते हैं। इसी पद्धति को '****जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति****' के नाम से भी जानते हैं।*
- *मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।*
- *इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।*
- *यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।*
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) ***(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)***
- *विश्व की प्राचीनतम* ***जुते हुए खेत*** *के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।*
- *यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।*
- *यहाँ के लोग एक साथ में* ***दो फसलें*** *करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं* ***जौ और गेहूं।***
- *यहाँ पर उत्खनन के दौरान* ***यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं*** *प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग* ***बलिप्रथा*** *में भी विश्वास रखते थे।*
- *इस सभ्यता का पालतू जीव* ***कुत्ता*** *था। इस सभ्यता के लोग* ***ऊँट*** *से भी परिचित थे इसके अलावा* ***गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से*** *भी परिचित थे।*
- *विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे* ***नगरीय सभ्यता*** *भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।*
- *यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यहाँ पर* ***समाधि तीन प्रकार*** *की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था*

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427-1438)- राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया ।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।
3. चूँड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया।
4. राव जोधा ने 1453 ई. में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया /
6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया /
7. दुर्ग के निर्माण के राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से जोधपुर स्थानातंरित की ।
2. राव जोधा ने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया ।
3. इसी समय इनकी एक रानी हाड़ी जसमा देवी ने किले के पास 'रानीसर' तालाब बनवाया ।
4. राव जोधा ने अपनी हाड़ी रानी जसमा देवी के मोह में पड़कर उसके पुत्र सातलदेव को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जबकि हकदार राव बीका था यहीं से उत्तराधिकार को लेकर कलह का बीज पड़ गया ।
5. राजा जोधा की मृत्यु 1489 ई. में हुई ।

मेहरानगढ़ दुर्ग

1. ज्ञात स्त्रोतों से यह विदित होता है कि मेहरानगढ़ की नींव का पहला पत्थर करणी माता (रिद्धि बाई) ने रखा था ।
2. इसकी नींव में राजा राम खड़ेला नामक व्यक्ति को जिंदा चुनवाया गया था ।
3. किपलिंग ने मेहरानगढ़ दुर्ग के लिए कहा कि – इस दुर्ग निर्माण शायद परियों व फरिश्तों ने किया था' ।
4. इसमें चामुण्डा माता का मंदिर, मानप्रकाश पुस्तकालय, फूलमहल, कीरत व धन्ना की छतरी इत्यादि के दर्शन होते हैं, तथा किलकिला, शम्भू बाण व गजनी खां, जो कि तोपों के नाम है, भी यहाँ देखने को मिलती है ।

आँवल-बावल की संधि (1453 ई.)

1. आँवल-बावल की संधि राणा कुम्भा और राव जोधा के मध्य हुई। जोधा ने अपनी पुत्री शृंगारदेवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से कर दिया ।
2. राव जोधा द्वारा अपने पुत्रों और प्रमुख सरदारों में राज्य बाँटने के कारण राव जोधा को मारवाड़ रियासत में सामन्त प्रथा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है ।
3. राव जोधा के पांचवे पुत्र राव बीका जी ने 'बिकानेर की स्थापना की तथा उसके पीछे इसी सामन्त प्रथा को एक कारण माना जाता है, जो राव जोधा ने स्थापित की ।

राव सातल (1489 - 1492)

- जोधा के पुत्र राव सातल ने सातलमेर कस्बा बसाया था। उसकी भटियाणी रानी फूलां में जोधपुर में कुलेलाव तालाब बनवाया ।
- अजमेर के हाकिम मल्लू खाँ के साथ पीपाड़ (जोधपुर ग्रामीण) के युद्ध में घायल हो जाने के कारण राव सातल की मृत्यु (1492 ई.) हो गई । इस युद्ध में राव सातल विजयी रहा था ।

घुड़ला नृत्य का इतिहास और सातलदेव

- यह घटना पीपाड़ (जोधपुर ग्रामीण) की है पीपाड़ में 140 कुंवारी कन्याएं गणगौर की पूजा कर रही थी । तभी वहां अजमेर के सूबेदार मल्लू खाँ का सेनापति घुड़ले खाँ आ गया और सभी कन्याओं को बंधक बना लिया । तब राव सातल देव ने घुड़ले खाँ पर आक्रमण कर सभी कन्याओं को मुक्त कराया तथा मुक्त होने की खुशी में कन्याएं नृत्य करने लगी । उस नृत्य को ही घुड़ला नृत्य कहा जाता है। यह घटना चैत्र कृष्ण अष्टमी को हुई तभी से इस तिथि को प्रतिवर्ष घुड़ला नृत्य किया जाता है । इस नृत्य की शुरुआत घुड़ले खाँ की पुत्री गिन्दोली ने की थी ।

राव सूजा 1492 - 1515

- यह राव जोधा का दूसरा पुत्र था । इसके समय बीकानेर के राव बीका ने जोधपुर पर आक्रमण किया था ।

राव गंगा 1515 – 1532

1. राव गंगा राव सूजा का पोता तथा राव बाघा जी का पुत्र था । तथा राव सूजा की मृत्यु के राव गंगा सिंहासन पर बैठे थे ।
2. राव गंगा ने अपने पुत्र मालदेव को 1527 के खानवा के युद्ध में राणा साँगा की सहायता के लिए भेजा था।
3. 3. राव गांगा ने गांगेलाव तालाब, गांगा की बावड़ी व गंगश्याम जी के मंदिर का निर्माण करवाया । राव गंगा की सीसोदणी रानी उत्तमदे राणा साँगा की पुत्री थी । जोधपुर का पद्मसर तालाब इन्होंने ही बनवाया था ।
4. राव गांगा ने **सेवकी गाँव (जोधपुर)** के युद्ध में (1529 ई.) बीकानेर के राव जैतसी की सहायता से अपने विद्रोही चाचा शेखा और नागौर के दौलत खाँ की सेनाओं को पराजित किया ।
5. राव गंगा नशे का शौकिन था एक दिन जब वह नशे में धुत था तभी उसके पुत्र राव मालदेव ने उसकी हत्या कर दी ।
6. राव मालदेव को मारवाड़ का पितृहन्ता भी कहा जाता है । हालांकि कुछ विद्वान इस मत से सहमत नहीं है।

राव मालदेव (1532 – 1562)

- इतिहासकारों में राव मालदेव के पितृहन्ता होने को लेकर अलग अलग मत हैं ।
- पण्डित रेउ के अनुसार राव गंगा अफीम के नशे में महल की खिड़की से गिर पड़े।
- डा. ओझा ने मालदेव को गंगा का हत्यारा माना है ।
- नैणसी और बांकीदास ने इस घटना का कोई उल्लेख नहीं किया ।
- सोजत के किले में राज्याभिषेक के एक वर्ष बाद मालदेव जोधपुर गया /
- समकालीन फारसी इतिहासकारों ने राव मालदेव को 'हशमत वाला बादशाह' कहा है।

मालदेव व रूठी रानी उमादे

- जैसलमेर के भाटी शासक लूणकरण की पुत्री उमादे का विवाह 1536 ई. में राव मालदेव के साथ हुआ था । परन्तु विवाह के बाद वह मालदेव से रूठकर अजमेर के तारागढ़ में रहने लगी । वह राजस्थान के इतिहास में रूठीरानी के नाम से प्रसिद्ध है । अजमेर पर शेरशाह का अधिकार हो जाने के बाद वह कोसाने (जोधपुर) और गूँदोज (पाली) होते हुए अन्ततः केलवा (राजसमंद) चली गई। मालदेव की मृत्यु पर वह सती हो गई। राव मालदेव ने पोकरण और मेड़ता के दुर्गों का निर्माण तथा सोजत, नागौर और सिवाणा के दुर्गों का जीर्णोद्धार करवाया था।

मालदेव के प्रमुख विजय अभियान

- नागौर विजय (1533 ई.) नागौर के दौलत खाँ को हीराबाड़ी के युद्ध में पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया ।
- सिवाणा की विजय (1538 ई.) सिवाणा पर राव डूंगरसी का अधिकार था ।
- मेड़ता व अजमेर पर अधिकार (1538 ई.) वीरमदेव को पराजित कर राव मालदेव ने (1538 ई.) में मेड़ता व अजमेर पर अधिकार कर लिया (1538 ई.) वीरमदेव भागकर शेरशाह सूरी की शरण में चला गया ।

जालौर की विजय (1539 ई.)

- राठौड़ बीदा के नेतृत्व में मारवाड़ी सेना ने सिकन्दर खाँ को पराजित कर जालौर को जीत लिया ।
- भाद्राजूण और रायपुर पर अधिकार (1539 ई.)
- भाद्राजूण और रायपुर पर सींघलों का अधिकार था । सींघलों का नेता वीरा पराजित हुआ ।

बीकानेर विजय-पाहेबा का 1541 ई.

- पाहेबा का युद्ध मालदेव व राव जैतसी के मध्य 1541 ई. को हुआ । इस युद्ध में राव जैतसी मारा गया । तथा इस युद्ध मालदेव का सेनापति राव कूँपा था जो कि एक महान वीर व स्वामीभक्त सेनापति था । इस युद्ध के मालदेव ने बीकानेर पर अधिकार कर लिया ।
- झुंझुनू की जागीर देकर बीकानेर का प्रशासक नियुक्त कर दिया । राव जैतसी का पुत्र कल्याणमल अपना पैतृक राज्य पुनः प्राप्त करने के लिए शेरशाह सूरी के पास चला गया।

मालदेव व हुमायूँ

- शेरशाह से हारने के बाद हुमायूँ जब फलौदी में था, तब उसने मालदेव के पास अपने दूत भेजे ।
- रायमल सोनीद- अतका खाँ - मीर समेद
- मालदेव ने भी सकारात्मक उत्तर दिया व हुमायूँ को बीकानेर परगना देने का वादा किया।
- हुमायूँ अविश्वास की वजह से जोधपुर न आकर सिंध की तरफ चला गया ।
- गिरि-सुमेल नामक स्थान पर / जैतारण (ब्यावर) का युद्ध - जनवरी, 1544 में हुआ था ।
- मारवाड़ के भौगोलिक स्थिति की बात करें तो यहाँ के राजा राव मालदेव राठौड़ और उनका किला मेहरानगढ़ ऊंची पहाड़ियों पर सुरक्षित दीवारों से महफुज था । ऊंची पहाड़ी पर होने के कारण इस पर चढ़ाई करना नामुमकिन था ।
- मेहरानगढ़ के चारों तरफ शहर बसाया गया था, जिसका नाम है जोधपुर ।
- शेरशाह सूरी ने मारवाड़ विजय के लिए एक नई रणनीति बनाई और उसने अपने 80 हजार घुड़सवार और 40 तोपों के साथ मारवाड़ से 90 किलोमीटर दूर गिरी सुमेल (ब्यावर जिले में) नामक जगह पर आकर डेरा डाल दिया।

- *मारवाड़ पर कोई आकस्मिक आक्रमण ना हो, इस आशंका को खत्म करने के लिए राजा राव मालदेव राठौड़ भी अपने 50 हजार घुड़सवारों के साथ 'गिरी- सुमेल' पहुंच गए वहां पर डेरा डालकर युद्ध की तैयारियां करने लगे।*
- *महीनों तक दोनों सेना आमने-सामने तैनात रही कि जरा सी भी आक्रामक गतिविधि नजर आई तो हमला कर देने वाली स्थिति बनी रही । मालदेव और उनकी सेना के लिए सुमेल गृहराज्य था । लेकिन शेरशाह सूरी के लिए यह राज्य अपरिचित, जिस कारण शेरशाह सूरी की सेना को राशन की दिक्कत होने लगी। राशन के अभाव में सेना युद्ध लड़ने के लिए निर्बल होने लगी। शेरशाह सूरी ने जब यह देखा तो उसने अपने विजय अभियान को बरकरार रखने के लिए एक नई योजना बनाई।*
- *उसने अपने नाम से एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने मारवाड़ के सरदारों (कूँपा व जैता) को धन्यवाद करते हुए लिखा कि मुश्किल घड़ी में अफगान सेना की मदद करने का शुक्रिया । और इस चिट्ठी को जान बूझकर उसने राजा मालदेव राठौड़ के छावनी के पास फेंकवा दिया । राजा मालदेव के सिपाहियों को चिट्ठी मिली । अफवाह आग की तरह फैली कि सामन्त कूँपा व जैता शेरशाह सूरी की मदद कर रहे हैं । राजा मालदेव को जोधपुर पर संकट दिखाई देने लगा । उन्होंने सेना लेकर वापस लौटने का फैसला किया।*
- *लेकिन **कूँपा व जैता** अपने ऊपर लगे गद्दारी के कलंक से आहत थे तथा उसे धोने के लिए दोनों ने रणभूमि में ही रुकने का प्रण लिया । उन्होंने पीछे न हटने का निर्णय लिया ।*
- *वापस जाकर मालदेव से आग्रह किया कि वह गिरी सुमेल (ब्यावर जिले में) के युद्ध में ही डटे रहना चाहते हैं और अफगानी सेना को यहीं रोकना चाहते हैं।*
- *राव मालदेव राठौड़ 10,000 घुड़सवारों की टुकड़ी सुमेल में ही छोड़कर बाकी सेना लेकर जोधपुर के लिए प्रस्थान कर जाते हैं ।*
- *शेरशाह सूरी को इसी दिन का इंतजार था। जैसे ही राजा मालदेव जोधपुर की तरफ दूर निकल जाते हैं, अफगानी सेना कूँपा और जैता की छावनी पर टूट पड़ती है ।*
- *शेरशाह सूरी को लगा था कि मुट्ठी भर सेना को तो वो आसानी से कुचल देंगे लेकिन सारा खेल पलट जाता है। राजपूती वीरों के आगे पठानों की तलवारें टूट कर बिखरने लगती हैं और कहा जाता है कि युद्ध शुरू होने के कुछ ही घंटों के भीतर शेरशाह की आधी सेना धरती छोड़ चुकी होती है ।*
- *भीषण रक्तपात मचाया गया, मारवाड़ी वीरों ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये । शेरशाह सूरी को अपनी पराजय दिखाई देने लगी और उसने अपनी सेना को वापस दिल्ली लौटने का आदेश तक दे दिया था ।*
- *लेकिन तभी अचानक अफगान सेनापति खवास खां आकर सूचना देते हैं, कि कूँपा और जैता **युद्ध भूमि** में मारे जा चुके हैं । हारती हुई सूरी सेना की जान में जान आई और वो युद्ध भूमि को वापस लौटते हैं ।*
- *इतिहासकार कहते हैं कि खुद शेरशाह सूरी ने भी माना कि उनकी वीरता के आगे अफगानी सेना घुटने पर आ गई थी । **शेरशाह सूरी ने कहा था कि 'वह मुट्ठी भर बाजरे के लिए दिल्ली सल्तनत गवा देता ।'***
- *परिणामतः मालदेव सिवाणा चला गया। शेरशाह ने मेड़ता वीरमदेव को तथा बीकानेर कल्याणमल को सौंप दिये।*

<u>निष्कर्ष</u>

- *गिरि सुमेल का युद्ध मालदेव और शेरशाह सूरी के मध्य हुआ था ।*
- *अविश्वास की वजह से मालदेव पीछे हट जाता है ।*
- *मालदेव की सेना के दो सेनानायक जैता व कूँपा शेरशाह के खिलाफ युद्ध करते हैं ।*
- *शेरशाह मुश्किल से इस युद्ध को जीत पाता है । अतः शेरशाह के मुंह से बरबस ही निकल गया - मुठी भर बाजरे के खातिर मैं हिन्दुस्तान की सल्तनत खो देता।*
- *शेरशाह ने जलाल खाँ जलवानी की आरक्षित टुकड़ी की सहायता से युद्ध जीता था।*
- *शेरशाह आगे बढ़कर **जोधपुर** पर अधिकार कर लेता है । **खवास खाँ को** जोधपुर सौंप दिया था।*
- *मालदेव सिवाणा (बालोतरा) चला गया।*
- *सिवाणा को राठौड़ो की 'शरणस्थली' कहते हैं ।*
- *शेरशाह के जाते ही मालदेव जोधपुर पर पुनः अधिकार कर लेता है ।*
- *22 मई, 1545 ई.- में शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद राव मालदेव ने जोधपुर सहित अपने सम्पूर्ण राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया । अबुल फजल' अकबरनामा में मालदेव की तारीफ करता है ।*
- *बदायूनी मालदेव को **'भारत का महान पुरुषार्थी राजकुमार'** बताता है ।*

<u>मालदेव की उपाधियाँ-</u>

- *हिन्दू बादशाह*
- *हशमत वाला राजा फारसी इतिहासकार*

<u>दरबारी विद्वान :-</u>

1. *ईसरदास (1. हाला झाला री कुंडलिया (सूर सतसई) (2. देवीयाण (3. हरिरस)*
2. *आशानन्द- (1. बाघा भारमली रा दूहा (2. उमादे भटियाणी रा कवित।*

<u>उदयसिंह से सम्बन्ध</u>

- *मालदेव ने बणवीर के विरुद्ध उदयसिंह की मदद की थी परन्तु बाद में खैरवा के ठाकुर जैत्रसिंह की दूसरी पुत्री से विवाह के प्रश्न पर मालदेव ने उदयसिंह से सम्बन्ध बिगाड़ लिये।*
- *राव मालदेव ने अजमेर के हाजी खाँ पठान को हरमाडा के युद्ध (24 जून, 1557 ई.) में उदयसिंह के विरुद्ध सहायता दी थी ।*

अध्याय - 6

स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)

क्र.	राज्य	शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9/11/1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15/11/1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26/12/1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6/1/1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22/1/1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10/2/1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21/1/1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7/1/1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15/4/1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2/1/1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5/10/1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह-II	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

- वह लालसोट होते हुए टोंक भी पहुँचे थे। टोंक की सेना ने तांत्या टोपे का समर्थन किया था। 'हम्मीरगढ़ के युद्ध" में तांत्या टोपे ने टोंक के नवाब " वजीरुद्दौला " को पराजित कर दिया।
- ब्रिग्रेडियर होम्स द्वारा पीछा किये जाने पर तांत्या सलूम्बर के रावत जोधसिंह के पास चले गये।
- तांत्या टोपे ने झालावाड़ पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया। अंग्रेज भक्त पृथ्वीसिंह झालावाड़ का शासक था।
- अंग्रेजों से पराजित होने पर तांत्या टोपे सितंबर 1858 में राजपुताना से बाहर चले गए।
- दिसंबर 1858 में वह पुनः राजपूताना में प्रवेश कर गये तथा बाँसवाड़ा पर अधिकार कर लिया।
- बाँसवाडा का शासक अंग्रेज समर्थक लक्ष्मण सिंह था।
- कालान्तर में वह दौसा होते हुये सीकर चले गये।
- सीकर में नरवर के जागीरदार मानसिंह नरुका ने धोखे से तांत्या टोपे को अंग्रेजों के हाथों पकड़वा दिया।
- टोपे सर्वप्रथम 8 अगस्त 1857 को भीलवाड़ा आये। वहाँ 9 अगस्त को उनका कोठारी नदी के तट पर जनरल राबर्ट्स तथा तांत्या टोपे के बीच " कुआड़ा का युद्ध " (भीलवाड़ा) लड़ा गया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति से संबन्धित <u>महत्वपूर्ण तथ्य</u>

- **धौलपुर**
- यहाँ पर क्रांति का नेतृत्व रामचन्द्र तथा हीरालाल द्वारा किया गया।
- इंदौर तथा ग्वालियर से आये सैनिकों ने यहाँ विद्रोह किया था।
- 1857 की क्रांति के समय धौलपुर का शासक भगवन्त सिंह था।
- पटियाला से आई सेना ने धौलपुर को विद्रोहियों से मुक्त करवाया।

<u>जयपुर</u>- राजस्थान में 1857 की क्रांति के समय जयपुर का शासक रामसिंह II था । इसने 1857 के विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की सहायता की थी।

- इसकी सेवा से प्रसन्न ब्रिटिश सरकार ने इसे " सितार-ए-हिन्द " का ख़िताब दिया।
- ईनाम के रूप में "**कोटपूतली का परगना**" इसे भेंट किया गया।

<u>बीकानेर</u>- 1857 की क्रांति के समय यहाँ का शासक सरदार सिंह था।

- यह अंग्रेजों की सहायता के लिये अपनी सेना लेकर पंजाब तथा हरियाणा गया था।
- अंग्रेजों ने इसकी सेवा से प्रसन्न होकर इसे 41 गाँव भेंट में दिये।
- 1857 के विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की सहायता के लिए राजपुताना से बाहर जाने वाला शासक सरदार सिंह ही था।

<u>बूँदी</u>- विद्रोह के समय महाराव रामसिंह यहाँ का शासक था । इसने क्रांतिकारियों को सहयोग दिया था।

<u>डूंगरपुर</u> - 1857 क्रांति के समय यहाँ का शासक रावल उदयसिंह था। नीमच की विद्रोही सेना को रोकने में इसने अंग्रेजों की सहायता की थी।

<u>करौली</u>- अंग्रेज भक्त मदनपाल 1857 की क्रांति के समय करौली का शासक था । कोटा के विद्रोह का दमन करने में इसने अंग्रेजी सेना का साथ दिया था।

मदनपाल की स्वामी शक्ति से प्रसन्न होकर अंग्रेजी सरकार ने " ग्रैंड कमांडर ऑफ़ द ऑर्डर ऑफ़ स्टार ऑफ़ इण्डिया" की उपाधि प्रदान की।

<u>अलवर</u>- यहाँ का शासक अंग्रेज समर्थक विनयसिंह था। इसने विद्रोह के दमन में सहायता के लिए अपनी सेना को बाहर भेजने का प्रस्ताव अंग्रेजों के सम्मुख रखा था।

<u>अमरचन्द बांठिया</u>- अमरचन्द जी का संबंध बीकानेर रियासत से था लेकिन इनका परिवार ग्वालियर में बस गया था। ये ग्वालियर के नगर सेठ थे।

1857 की क्रांति समय इन्होंने अपना खजाना खोलकर लक्ष्मीबाई सहित अन्य क्रांतिकारियों की सहायता की ।

विद्रोहियों की सहायता के दंड स्वरूप इन्हें 22 जून 1858 को ग्वालियर में एक पेड़ के नीचे फाँसी दे दी गई ।

अमरचन्द बांठिया राजस्थान से 1857 की क्रांति में शहीद होने वाले प्रथम व्यक्ति थे।

इन्हें राजस्थान का दूसरा भामाशाह भि कहा जाता है ।

इन्हें राजस्थान का मंगल पाण्डे भी कहा जाता है।

<u>तथ्य</u>

- राजस्थान में 1857 की क्रांति में सबसे कम आयु में शहीद होने वाला " हेमू कालानी " था। इसे टोंक में फाँसी दी गई।
- कोटा का विद्रोह राजपूताना का सबसे बड़ा जन विद्रोह था।
- कोटा के किले को राजस्थान में 1857 की क्रांति का गढ़ कहा जाता है।
- निम्बाहेड़ा के " फिरोजशाह" ने स्वयं को सम्राट घोषित कर विद्रोह कर दिया था।
- प्रतापगढ़ के शासक दलपतसिंह को अंग्रेजों ने 2000 रुपये की खिलअत प्रदान की क्योंकि उसने क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ दिया था।
- ब्यावर और खेरवाड़ा सैनिक छावनियों में सैनिक विद्रोह नहीं हुआ।
- 1857 में विष्णु भट्ट गोडसे द्वारा " माझा प्रवास " पुस्तक की रचना की गई।
- बाँकीदास द्वारा " आयो अंगरेज मुल्क रे उपर " गीत की रचना की गई।
- "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी" कविता की रचना सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा की गई ।
- **"झल्ले आउवो", " भाया सामल रही जो", " काली टोपी"," पीड़ितों का पंछीडा", अर्जी एवं तर्ज बगड़ावत"** आदि 1857 की क्रांति के गीत थे।
- 1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री " पामर्स्टन " था।

अध्याय – 3

हस्त कला / हस्तशिल्प

- राजस्थान की हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध है इसलिए राजस्थान को हस्तकलाओं का अजायबघर / खजाना कहा जाता है।
- हस्तकला उद्योग केन्द्र बोरानाडा, जोधपुर में है।
- हस्तकलाओं का तीर्थ जयपुर को कहते हैं।
- राजस्थान में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक सरक्षण देने वाला संस्थान राजसीको है जिसकी स्थापना 3 जून, 1961 को जयपुर में की गई थी। राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को राजस्थान लघु उद्योग निगम राजस्थली नाम से विपणन करता है।
- वर्ष 1998 की ओद्यौगिक नीति में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक संरक्षण दिया गया है।

पॉटरी

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की जाने वाली आकर्षक चित्रकारी पॉटरी कहलाती है।
- पॉटरी का उद्भव दमिश्क (सीरिया की राजधानी) में माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।

ब्लू पॉटरी

- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पदम् श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्ल्यू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।

ब्लेक पॉटरी

- ब्लेक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है।
- कोटा की सुनहरी ब्लैक पॉटरी फूलदानों, मटकों और प्लेटों के लिए प्रसिद्ध है।
- यह स्ट्रॉबोर्ड का एकमात्र कारखाना है।

कागजी पॉटरी

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।

मोलेला पॉटरी

- मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है ।

बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी)

- इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है ।

मूनव्वती / उस्ता कला

- इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।
- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- हीसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार हैं, जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इसके कारीगर हैं ।
- उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त, 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हीसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।
- इलाही बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिह का चित्र बनाया ।

मथैरणा कला

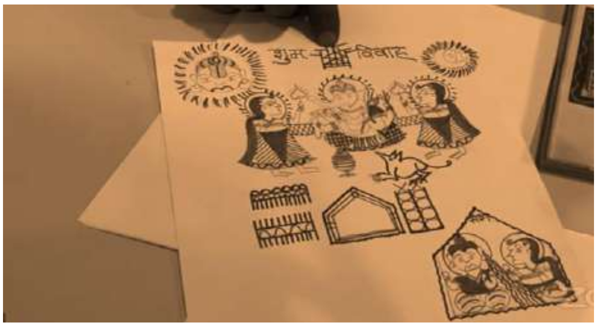

- इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। इस कला में ईसर, गणगौर, देवी - देवताओं की भीत्ति चित्र बनाये जाते हैं । मुन्नालाल, चन्दूलाल मथैरणा कला के प्रमुख कारीगर थे।
- **मीनाकारी-** विभिन्न रंगों की मूल्यवान रत्नों पर मीनें की सहायता से तथा सोने - चाँदी के आभूषणों पर चित्रकारी या रंग भरने की कला को मीनाकारी कहते है।

- मीनाकारी कला का उद्भव पर्शिया (ईरान) में माना जाता है।
- इसे चौसरों के समय फारस में लाया गया और फारस से मुगलों द्वारा लाहौर में लायी गई जहाँ पर सिक्खों द्वारा यह कार्य किया जाता हैं।
- लाहौर से महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा आमेर में लाया गया।
- लाल रंग बनाने में जयपुर के कलाकार कुशल है।
- मीनाकारी में फूल-पत्ती, मोर आदि का अंकन प्रायः किया जाता है।
- कोटा के रेतवाली क्षेत्र में कांच पर विभिन्न रंगों से मीनाकारी का काम किया जाता है।
- कागज जैसे पतले पत्थर पर मीनाकारी करने के लिए बीकानेर के मीनाकार प्रसिद्ध है।
- जिसमें मुख्य मीनाकार हरिसिंह, अमरसिंह, किशनसिंह, गोभासिंह, श्यामसिंह थे।
- **राज्य में निम्न मीनाकारी प्रसिद्ध है-**
  (i)चाँदी पर मीनाकारी- नाथद्वारा, राजसमंद
  (ii)पीतल पर मीनाकार जयपुर
  (iii)तांबे पर मीनाकारी- भीलवाड़ा
  (iv)सोने पर मीनाकारी- प्रतापगढ़
- वर्तमान में जयपुर की मीनाकारी प्रसिद्ध है, जिसमें मुख्य रूप से कुदरतसिंह तथा मुन्ना लाल (गुरूचरण सिंह) विख्यात है।
- सरदार कुदरत सिंह को 1988 में इस काल के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका हैं।

❖ **थेवा कला**

- थेवा कला प्रतापगढ़ की प्रसिद्ध है।
- थेवा कला का नाम इनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका में अंकित है।
- काँच पर सोने या चाँदी का सूक्ष्म चित्रांकन जिसमें रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है । इस कला की शुरूआत लगभग 500 वर्ष पूर्व नाथूजी सोनी ने महाराजा सावंत सिंह के समय प्रतापगढ़ में की थी।
- इस कला के लिए प्रतापगढ़ का सोनी परिवार विख्यात है।
- इसे सोनी परिवार भारत का एकमात्र ऐसा परिवार है जिसे किसी हस्तकला के लिए एक ही परिवार के सर्वाधिक व्यक्तियों को राष्ट्रपति पुरस्कार दिया जा चुका है।
- थेवा कला के कारीगर पन्नीगर कहलाते है।

❖ **रत्नाभुषण**

- हीरे - जवाहारात-पन्ना का कार्य रत्नाभुषण कहलाता है।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्ड़ी जयपुर है।

❖ **कोफ्तगिरी**

- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर है।
- कोफ्तगिरी का कार्य दमिश्क से पंजाब लाया गया और पंजाब से गुजरात तथा गुजरात से राजस्थान लाया गया।
- फौलाद की बनी वस्तुओं पर यह काम सोने के पतले तारों की जड़ाई द्वारा किया जाता है।
- तहनिशां के काम में डिजाइन को गहरा खोद कर उसमें पतला तार भर दिया जाता है। अलवर के तलवार साज एवं उदयपुर के सिगलीगर यह काम सुन्दर ढंग से करते हैं।
- कोफ्तगिरी शिल्प का इस्तेमाल ढाल, तलवारों व खंडर और अन्य उपयोगी सामग्री जैसे डिब्बे, बक्से, भोजन काटने और खाने के कटलरी सामान शिकार चाकू, छुरी इत्यादि के निर्माण में किया जाता है
- इसके कलाकार को कोफ्तगर कहा जाता है ।

❖ **पिछवाई कला**

- कपड़े पर चित्रित उस चित्र शैली का नाम है जिसे मन्दिरों में ' मूर्ति के पीछे ' की दीवार को ढ़कने और सुन्दर दिखाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- राजस्थान में पिछवाई कला का विकास 1700 ई. के आस - पास माना जाता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- ***भद्रकाली मेला*** - हनुमानगढ़ में स्थित मां भद्रकाली मंदिर में प्रतिवर्ष चेत्र सुदी अष्टमी व नवमी को मेला भरता है।

धौलपुर जिले के मेले

- ***तीर्थराज का मेला*** - तीर्थराज का यह मेला मंचकुण्ड, धौलपुर में भादवा सुदी षष्ट्मी को भरता है।
- ***सैंपऊ महादेव का मेला*** - सैंपऊ महादेव का यह मेला सैंपऊ (धौलपुर) स्थान पर फाल्गुन तथा श्रावण मास में चतुर्दशी को भरता है।

बूँदी जिले के मेले

- ***इंद्रगढ़ माता का मेला*** - यह मेला बूंदी जिले के इंद्रगढ़ में वैशाख शुक्ला पूर्णिमा, चैत्र व आश्विन नवरात्रा में भरता है।
- ***कजली तीज /उजली तीज का मेला*** - यह मेला बूंदी जिले में भाद्रपद कृष्णा तृतीया को भरता है ।

चित्तौड़गढ़ जिले के मेले

- ***राम रावण मेला*** - यह मेला चित्तौड़गढ़ जिले के बड़ी सादड़ी में चैत्र शुक्ला दशमी को लगता है।
- ***सांवलियाजी का मेला (जलझूलनी एकादशी का मेला)*** - यह मेला चित्तौड़गढ़ जिले के मण्डफिया में भाद्रपद शुक्ल एकादशी को लगता है।
- ***जौहर मेला*** - यह मेला चित्तौड़गढ़ दुर्ग में चैत्र कृष्ण एकादशी को लगता है।
- ***मातृकुण्डिया का मेला*** - यह मेला चित्तौड़गढ़ जिले के राशमी, हरनाथपुरा में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।
- ***मीरा महोत्सव*** - यह महोत्सव चित्तौड़गढ़ में शरद पूर्णिमा को आयोजित होता है।

जैसलमेर जिले के मेले

- ***वैशाखी मेला*** - यह मेला वैशाखी, जैसलमेर में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।
- ***चुंघी तीर्थ मेला*** - यह मेला चुंगी तीर्थ, भीलों की ढाणी (जैसलमेर) में भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को भरता है।
- ***तेमड़ीराय मेला*** - यह मेला तेमड़ीराय मंदिर, जैसलमेर में भरता है।
- ***रामदेवरा मेला*** - यह मेला जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील में रामदेवरा (रुणेचा) नामक स्थान पर भाद्रपद शुक्ला द्वितीया से एकादशी तक भरता है।

जालौर जिले के मेले

- ***सेवड़िया पशु मेला*** - यह पशु मेला जालौर के रानीवाड़ा क्षेत्र में रानीवाड़ा रेलवे स्टेशन से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर आयोजित होता है। यह मेला चेत्र सुदी एकादशी से प्रारंभ होकर चैत्र पूर्णिमा तक चलता है। इसमें कांकरेज नस्ल के बैल तथा मुर्रा नस्ल की भैंसों का क्रय-विक्रय होता है।

सांचौर जिले के मेले

- ***बाबा रघुनाथपुरी पशु मेला*** - यह मेला भी सेवड़िया पशु मेले के समय सांचौर जिले में आयोजित होता है। इस मेले में भी पशुओं के क्रय-विक्रय के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, आकर्षक प्रदर्शनी तथा फिल्म प्रदर्शन का भी आयोजन किया जाता है।

प्रतापगढ़ जिले के मेले

- ***भंवर माता का मेला*** - यह मेला प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी तहसील में प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन के नवरात्रों में भरता है।
- ***सीता माता का मेला*** - तीर्थ स्थल सीतामाता में यह मेला प्रतिवर्ष जेष्ठ अमावस्या को लगता है। भगवान राम के पुत्र लव कुश का जन्म यहीं पर हुआ था। यहां पर लव कुश कुंड एवं बाल्मीकि आश्रम भी स्थित है।
- ***गौतमेश्वर महादेव का मेला*** - यह मेला प्रतापगढ़ की अरनोद तहसील में प्रतिवर्ष वैशाख पूर्णिमा से 2 दिन तक लगता है। यहां गौतम ऋषि का स्थान था। गौतमेश्वर आदिवासी भीलों के आराध्य देव है।
- ***दीपनाथ महादेव का मेला*** - दीप नाथ महादेव के मंदिर का निर्माण महारावत सामंतसिंह के कुंवर दीपसिंह ने करवाया था। इस मंदिर में प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है।

- ***हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार***

➢ ***हिन्दू कैलेंडर के अनुसार देशी महीने***

1. ***चैत्र*** –मार्च-अप्रेल
2. ***वैशाख*** –अप्रेल -मई
3. ***ज्येष्ठ*** –मई-जून
4. ***आषाढ़*** –जून-जुलाई
5. ***श्रावण***-जुलाई- अगस्त
6. ***भाद्रपद***-अगस्त -सितम्बर
7. ***अश्विन***-सितम्बर- अक्टूबर
8. ***कार्तिक*** – अक्टूबर –नवम्बर
9. ***मार्गशीर्ष*** –नवम्बर – दिसम्बर
10. ***पौष*** –दिसम्बर- जनवरी
11. ***माघ*** –जनवरी-फरवरी
12. ***फाल्गुन*** –फरवरी –मार्च

- ***हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार***

➢ राजस्थान में त्योहारों से सम्बन्धित एक कहावत प्रचलित है- "तीज त्यौहार ले बावड़ी ले डूबी गणगौर।" अर्थात तीज के साथ त्योहारों की शुरुआत हो जाती है और गणगौर के साथ समापन हो जाता है।

➢ ***गणगौर***

- इस त्यौहार में सुहागन स्त्रियाँ शिव-पार्वती की पूजा करती है।
- गणगौर में 'गण' महादेव का व गौरी पार्वती का प्रतीक है।

- इस दिन कुँवारी कन्याएँ मनपसंद वर प्राप्ति की तथा विवाहित स्त्रियाँ अपने अखंड सौभाग्य की कामना करती है।
- गणगौर का त्यौहार पार्वती के "गौने" का सूचक है।
- गणगौर का त्यौहार लगभग 18 दिन तक (चैत्र कृष्ण एकम से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया) चलता है।
- इन दिनों सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता है।
- जयपुर की गणगौर प्रसिद्ध है।
- धींगा गणगौर एवं बेंतमार मेला जोधपुर में लगता है।
- उदयपुर के महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को गणगौर मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया था जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ।
- बिना ईसर की गणगौर जैसलमेर में पूजी जाती है।
- राजस्थान में नाथद्वारा क्षेत्र में चैत्र शुक्ल पंचमी को गुलाबी गणगौर मनाई जाती है ।

➢ **शीतला अष्टमी**

- यह त्यौहार चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है।
- इस दिन शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है एवं शीतला माता की पूजा की जाती है और व्रत भी रखा जाता है।
- समस्त भोजन सप्तमी की संध्या को बनाकर रखा जाता है।
- इस दिन बासी खाना खाया जाता है जिससे इसे 'बास्योड़ा' कहा जाता है ।
- बच्चो के चेचक निकलने पर शीतला माता की पूजा की जाता है।
- इसलिए शीतला माता को बच्चों की संरक्षिका भी कहा जाता है।
- शीतला माता का मंदिर चाकसू-जयपुर में है ।
- मंदिर का निर्माण माधोसिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया।
- शीतला माता का वाहन गधा होता है, माता के पुजारी कुम्हार जाती के लोग होते है।

➢ **घुड़ला का त्यौहार**

- यह त्यौहार जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलो में चैत्र कृष्ण अष्टमी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

➢ **घुड़ला त्यौहार का आरम्भ**

कोसाणा गांव में लगभग 200 कुंवारी कन्याएँ गणगौर पर्व की पूजा कर रही थी । घुडला खान मुसलमान सरदार अपनी फ़ौज के साथ निकल रहा था, उसने सभी बच्चियों का अपहरण कर लिया, इसकी सूचना गाँव के कुछ घुड़सवारों ने जोधपुर के राव सातल सिंह राठौड़ जी को दी। राजपुतो की तलवारों ने भागती मुग़ल सेना का पीछा कर ख़ात्मा कर दिया । राव सातल सिंह जी ने तलवार के भरपुर वार से एक ही झटके में दुष्ट घुडला खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। राव सातल सिंह ने सभी बच्चियों को मुक्त करवाकर उनके सतीत्व की रक्षा की। गांव वालों ने उस दुष्ट घुडला खान का कटा हुआ सिर बच्चियों को सोंप दिया। बच्चियो ने घुडला खान के सिर को घड़े पर रख कर उस घड़े में जितने घाव घुडला खान के शरीर पर हुये, उतने छेद किये और फिर पुरे गाँव में घुमाया एवं हर घर में रोशनी की गयी। तभी से घुडला त्यौहार मनाया जाता हैं।

➢ **नववर्ष**

- यह चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाता है।
- इस दिन हिन्दुओं का नया वर्ष शुरू होता है।
- हिंदी पंचांग में इस तिथि का बहुत अधिक महत्व है।

➢ **वसन्तीय नवरात्र**

- यह नवरात्र चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक चलते है।
- इसमें इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की पूजा की जाती है।

➢ **अरुंधति व्रत**

- यह व्रत चैत्र शुक्ल एकम से चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

➢ **अशोकाष्टमी**

- यह चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन अशोक वृक्ष की पूजा की जाती है।

➢ **रामनवमी**

- यह त्यौहार अंतिम नवरात्र (चैत्र शुक्ल नवमी) के दिन भगवान श्री राम के जन्म दिन पर मनाया जाता है।
- इस दिन रामायण का पाठ किया जाता है।
- श्रद्धालुगण सरयू नदी में स्नान करके पुण्य लाभ कमाते है।

➢ **आखा तीज/अक्षय तृतीया**

- यह वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है।
- यह एक अबूझ सावा है।
- इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बाल विवाह होते है।
- इस दिन किसान लोग अपने हल एवं सात अन्ना की पूजा करते है और शीघ्र वर्षा होने की कामना करते है।
- इसी दिन सतयुग एवं त्रेतायुग का आरम्भ माना जाता है।

➢ **वट सावित्री व्रत (बड़मावस)**

- यह ज्येष्ठ अमावस्या को मनाया जाता है।
- इस दिन स्त्रियां व्रत रखकर बड़ या बरगद की पूजा कर अपने पुत्र एवं पति की आरोग्यता के लिए प्रार्थना करती है।

❖ दादू सम्प्रदाय

- इसके प्रवर्तक दादू दयाल जी थे ।
- इन्हें राजस्थान का कबीर कहा जाता हैं ।
- इनका अभिवादन सत्यराम होता हैं ।
- दादू जी का जन्म सन् 1544 ई. में गुजरात के अहमदाबाद नगर में हुआ था ।
- दादुजी की रचनाएँ दादूदयाल री वाणी ढूंढाडी भाषा हैं ।
- सन्त बुद्धाराम/ बुड्डन जी / वृन्द्धानंद जी (ये संत कबीर के शिष्य थे) से दीक्षा ग्रहण की और 19 वर्ष की आयु में राजस्थान आये ।
- इन्होनें अपना प्रथम उपदेश 1568 में सांभर में दिया तथा यही पर बह्म की उपासना पर जोर देते थे।
- दादू पंथी साधु विवाह नहीं करते थे ।
- सन् 1602 में नरैना (फुलेरा) आ गये और वही ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी 1605 ई. में महाप्रयाण किया ।
- 1585 ई. में फतेहपुर सीकरी की यात्रा के दौरान उन्होंने अकबर से भेंट की तथा उसे अपने विचारों से प्रभावित किया।
- इन्होनें बाहय आडम्बरों को दूर करने के लिए **निपख नामक** आंदोलन चलाया ।
- नरायणा (नरैणा) जयपुर ग्रामीण में इनका अन्तिम समय व्यतित हुआ, जहां इनकी प्रधा गद्दी हैं ।
- दादू पंथ के सत्संग स्थल "अलख दरीबा" कहलाते है ।
- कविता रूप में व्यक्त विचारों को दादू वाणी तथा दादू दयाल जी रा दूहा कहा जाता हैं ।
- मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया तथा हिन्दू मुसलमान एकता पर ध्यान दिया था ।
- निर्गुण ब्रह्म की उपासना व शव को जंगलों में खुला छोड़ना, मोक्ष में विश्वास नही रखते थे ।
- दादू जी का मेला नरायणा में फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को भरता हैं ।

- **दादू की पाँच प्रमुख शाखाऐं हो गई –**

1. खालसा (गरीबदास जी से संबंधित)
2. विरक्त (इसे निहंग भी कहा जाता है, जो चलते फिरते हुये गृहस्थियों को आदेश देते हैं)
3. उतरादे (ये राजस्थान छोड़कर उत्तर भारत चले गये)
4. खाकी (ये शरीर पर भस्म रमा कर रहते हैं)
5. नागा (ये नंगे रहते हैं, इसकी स्थापना सुंदरदास जी ने की थी)

- **अलख दरीबा** - दादू पंथ के सत्संग स्थलों को कहा जाता हैं ।
- **हरडेबानी** - दादू जी के शिष्य रज्जब जी द्वारा लिखित ग्रंथ।
- **दादू खोल** - दादू जी ने भैराना (नारायणा, जयपुर) की पहाड़ी की गुफा समाधि ली ।
- **दादूजी के मुख्य शिष्य** इनके 152 शिष्य थे, जिनमें से प्रमुख 52 शिष्य जो **52 स्तंभ** कहलाते है, जिनमें इनके पुत्र गरीबदास व मिस्किनदास के अलावा रज्जबजी, सुंदरदास जी, जन गोपाल जी, माधोदासजी, जगन्नाथ जी थे ।

➢ संत सूरदास जी

- इनका जन्म दौसा में खण्डेलवाल परिवार में में हुआ ।
- इनके पिता का नाम परमानन्द (चोखा जी) था।
- इन्होंने दादू पंथ में नागा साधुवर्ग को प्रारंभ किया।
- इनके ग्रंथ ज्ञान समुद्र, ज्ञान सवैया (सुंदर विलास) सुंदर सार तथा सुंदर ग्रंथावली हैं ।
- इनका निधन में सांगानेर में हुआ ।
- संत सूरदास जी ने दार्शनिक सिद्धांतों को ज्ञानमार्गी पद्धति में पद्यबद्ध किया।
- इन्होने 42 ग्रंथों की रचना की। इन्हें हिन्दी साहित्य का शंकराचार्य कहा जाता है ।

➢ रज्जब जी

- इनका जन्म सांगानेर (जयपुर) में 16वीं शताब्दी में पठान परिवार में हुआ ।
- विवाह करने जाते समय दादूदयाल जी के उपदेश सुन लिए थे और उसी समय उनके शिष्य बन गये और आजीवन दूल्हे के वेश में दादू के उपदेश देते रहे।
- इन्होंने रज्जब वाणी, हरडे वाणी व सर्वगी ग्रंथ लिखे।
- इनका स्वर्गवास सांगानेर में हुआ, जहाँ इनकी प्रधान गद्दी हैं ।

➢ **संत गरीबदास जी**

- ये दादू दयाल जी के पुत्र थे, दादू जी के बाद प्रधान गद्दी पर ये ही बैठे थे, इन्होंने साखी पद, अनभै प्रबोध तथा अध्यात्म प्रबोध नामक ग्रंथ लिखे ।
- गरीब दास ने एक विशाल संग्रह की रचना की जो **सद्‌ग्रंथ साहिब** के नाम से प्रसिद्ध है।

➢ **संत जनगोपाल जी**

- ये फतेहपुर सीकरी निवासी थे ।
- दादू जी की सीकरी यात्रा के दौरान इन्होंने गुरुमंत्र लिया तथा दादू दयाल लीला परची, ध्रुव चरित्र, प्रहलाद चरित्र, भरत चरित्र, मोह विवेक, सुख संवाद, चौबीस गुरुओं की लीला नामक ग्रंथ लिखे ।

❖ **संत लालदास जी (लाल दासी सम्प्रदाय)**

- इनका जन्म अलवर के धोलीदूब गांव में श्रावण कृष्ण पंचमी को 1540 में हुआ था ।
- पिता का नाम – चांदमल तथा माता का नाम - समदा
- ये मेंव जाती के थे। पेशे से लकड़हारे थे । इनके गुरु का नाम मुस्लिम संत गद्दन चिश्ती था ।
- इनकी मृत्यु नंगला गांव (भरतपुर) में हुई थी, तथा शेरपुर ग्राम (अलवर) में इन्हें समाधि दी गई।
- इनका प्रमुख ग्रंथ - बानी था । जिसमें उपदेश उल्लेखित है, जिन्हें लालदास की चेतावनीयां कहा जाता हैं ।
- ये पुरुषार्थ पर जोर दिया करते थे, जो प्रत्येक साधु को स्वयं कमाकर खाने का उपदेश देता हैं ।
- इस सम्प्रदाय की दीक्षार्थी को दीक्षा देते समय काला मुंह कर, जूतों की माला पहनाकर, गधे पर उल्टा मुहँ कर बैठाकर गाँव में घुमाया जाता हैं । तथा अंत में शरबत पिला कर दीक्षा दी जाती हैं ।

❖ **प्राणनाथी / परनामी सम्प्रदाय**

- इसके प्रर्वतक प्राणनाथ जी थे जो कृष्ण को पूजते थे ।
- इनका जन्म गुजरात के जामनगर में हुआ था ।
- प्राणनाथ जी के उपदेश कुंलजम स्वरूप नामक ग्रंथ हैं जो गुजराती भाषा में लिखा गया है ।
- इनके आराध्य देव कृष्ण देव हैं तथा अभिवादन प्रणाम होता हैं। परनामी सम्प्रदाय की मुख्यपीठ मध्यप्रदेश के पन्ना नामक स्थान पर हैं ।
- जयपुर में इनके बहुत अनुयायी है। जिसका कृष्ण मंदिर राजापार्क, आदर्श नगर में हैं ।

❖ **निरंजनी सम्प्रदाय**

- इसके प्रवर्तक हरिदास जी थे । इनका मूल नाम हरिसिंह सांखला था ।
- इनका जन्म कापडोंद गाँव (डीडवाना-कुचामन) 1452 ई. में हुआ ।
- मूलतः ये डकेती का कार्य करते थे ।
- इनके उपदेश मंत्र राजप्रकाश व हरि पुरुष जी की वाणी में संग्रहित हैं ।
- ये परमात्मा को अलख निरंजन व हरि निरंजन के नाम से जानते हैं ।
- इनका देहान्त नागौर के गाढ़ा स्थान पर हुआ जहाँ पर इस सम्प्रदाय की मुख्य पीठ स्थित है।
- जिनमें कुछ घरबारी हैं जो गृहस्थियों की तरह रहते हैं । तथा कुछ निहंग हैं जो खाकी रंग की गुदड़ी गले में डाले रहते हैं और मांग कर खाते हैं ।
- हरिदास जी को कलयुग का वाल्मीकी कहा जाता है।
- इनके उपदेश मंत्र राज प्रकाश तथा हरिपुरुष जी की वाणी में संग्रहित हैं।

❖ **चरणदासी सम्प्रदाय**

- इस सम्प्रदाय की स्थापना चरणदास जी ने की थी।
- इनका जन्म अलवर के डेहरा गाँव में हुआ ।
- इनके पिता मुरलीधर तथा माता कुंजों देवी थी ।
- इनके बचपन का नाम रणजीत था ।
- इनके गुरु शुकदेव मुनि थे ।
- इन्होंने अपने अनुयायियों के लिए 42 नियम बनाये तथा पीले वस्त्र धारण करते थे ।
- इन्होनें ब्रह्मज्ञान सागर, ब्रह्म चरित्र तथा भक्ति सागर ग्रंथ लिखे ।
- इन्होंने दिल्ली पर नादिरशाह के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी । (ये ईरान के शासक थे जिन्होंने 1739 में दिल्ली पर आक्रमण किया जिसे करनाल का युद्ध कहा जाता हैं ।)
- दिल्ली को अपना केन्द्र बनाया,जहाँ इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ हैं ।
- ये सगुण व निर्गुण दोनों प्रकार की भक्ति पर जोर देते थे ।
- इनकी दो शिष्या दयाबाई जिन्होनें दयाबोध ग्रंथ लिख तथा सहजो बाई जिन्होंने सहज प्रकाश ग्रंथ लिखा थी ।

❖ **निष्कलंक सम्प्रदाय**

- इस सम्प्रदाय की स्थापना मावजी ने की थी ।
- इनका जन्म डूंगरपुर की आसपुर तहसील के सांबला गांव में हुआ था ।
- 1727 ई. में बेणेश्वर में इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ ।
- इन्होंने अछूतो के सम्मान में 'लसोडिया आंदोलन' चलाया।
- इन्होंने कृष्ण लीलाओं की बागड़ी बोली में रचना की ।
- इन्होंने अपनी प्रधान पीठ सावला गांव में स्थपित की ।
- इनका प्रमुख ग्रंथ चौपड़ा है, जिसके दर्शन दीपावली के दिन ही होते हैं ।
- ये कृष्ण निष्कलंक अवतार की पूजा करते हैं ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vl

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
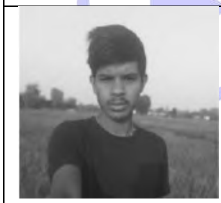	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
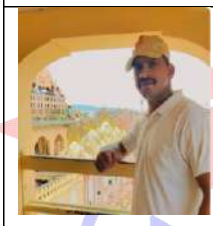	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others......

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/we22vv

Online Order करें - https://shorturl.at/tDOY8

Call करें - 9887809083